बी॰ए॰भाग-3
हिन्दी - प्रतिष्ठा
पेपर - 7
'भाषाविज्ञान के प्रयोजन'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी॰ के॰ कालेज, डुमराँव बक्सर

भाषाविज्ञान के प्रयोजन -

भाषाविज्ञान को लेकर कोई प्रश्न पूछ सकता है कि इसके अध्ययन से क्या लाभ है? तो इसका उत्तर भी एक प्रश्न ही है।

(1) किसी भी शास्त्र के अध्ययन से क्या लाभ है? कोई इतिहास, अर्थशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान या भौतिक - विज्ञान पढ़ता है तो किस लाभ के लिए? प्रत्येक दर्शन पढ़ने वाला दार्शनिक नहीं होता और न जीवन में दर्शन से काम लेता है। इतिहास में एम॰ ए॰ करनेवाला जब मुंसिफ़ या मजिस्ट्रेट बन जाता है तो इतिहास के ज्ञान से उसे कोई सहायता नहीं मिलती। अर्थशास्त्र पढ़ने वालों का आय-व्यय अधिक नियमित हो, ऐसा नहीं देखा जाता। भौतिक - विज्ञान का प्रत्येक अध्येता आविष्कारों की श्रेणी में नहीं बैठ जाता। फिर भी लोग इन शास्त्रों को इसलिए पढ़ते हैं कि इनसे ज्ञान के क्षितिज का विस्तार होता है। किसी भी शास्त्र की उपयोगिता यही है। मैंने बचपन में बीजगणित पढ़ने में बहुत समय नष्ट किया है, पर उससे परीक्षा के दिनों में आतंकित होने के अलावा आज तक कोई दूसरा काम न ले सका।

(2) भाषाविज्ञान के द्वारा भाषा का सम्यक् ज्ञान होता है। मनुष्य जिन वस्तुओं से काम लेता है, उनके विषय में जानना चाहता है। जितना काम हम भाषा से लेते हैं उतना शरीर के अतिरिक्त और किसी वस्तु से नहीं लेते। फिर भी स्थिति यह है कि न तो शरीर की रचना या क्रिया के सम्बन्ध में जानते हैं और न भाषा के सम्बन्ध में। शरीर की चिंता चिकित्सक पर छोड़ देते हैं और भाषा की चिन्ता वैयाकरण पर। पर जिस वस्तु से दिन-रात काम लेना हो उसकी थोड़ी-बहुत जानकारी तो प्रत्येक व्यक्ति को रहनी चाहिए।

(3) भाषाविज्ञान से भाषा के अध्ययन में पर्याप्त सहायता मिलती है। भाषा के स्वरूप और समुचित प्रयोग का ज्ञान तब तक पूर्णतः नहीं हो सकता जब तक भाषा के तत्वों का थोड़ा-बहुत परिचय न हो और वह भाषा विज्ञान से ही सम्भव है।

(4) किसी समाज और संस्कृति के ज्ञान के लिए भी भाषाविज्ञान बहुत उपयोगी है, उससे समाज-विशेष की भौतिक सभ्यता और मानसिक विकास का पता चलता है। वेदों की भाषा आज की भाषा से किस अंश में भिन्न थी? उस भिन्नता से उस युग के जीवन पर क्या

प्रकाश पड़ता है? ये बातें भाषाविज्ञान की सहायता से ही जानी जा सकती हैं।

(5) साहित्य ज्ञान के लिए भी भाषाविज्ञान का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि उससे भाषा के निर्माण-पक्ष का परिज्ञान होता है।

(6) भाषाविज्ञान वाक्-चिकित्सा का आवश्यक अंग बन गया है। कोई तुतलाता है या हकलाता है तो उसकी अभिव्यञ्जना बाधित होती है। उसकी तुतलाहट या हकलाहट का क्या कारण है? ध्वनियों के उच्चारण में उससे क्या भूल हो रही है? उसे कैसे दूर किया जा सकता है? आदि प्रश्न भाषा विज्ञान के द्वारा ही समाहित हो सकते हैं। विदेशों में वाक्-चिकित्सा का रूप वैसा ही व्यापक हो गया है जैसा शारीरिक चिकित्सा का।

(7) भाषाविज्ञान से संचार के साधनों को सम्पुन्नत करने के लिए भी सहायता लेनी पड़ती है।

इस प्रकार साध्य और साधन दोनों रूपों में भाषाविज्ञान का अध्ययन उपयोगी सिद्ध होता है। वह अपने-आपमें जहाँ साध्य है, वहाँ दूसरे ज्ञानों का साधन भी।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिंदी-विभाग
डी. के. कालेज, डुमरॉव
बक्सर बिहार